आपने लिखा

कल शाम अपने कार्यालय से वापस आने के बाद मैंने अपने घरेलू पुस्तकालय से 'संदर्भ' के पुराने अंक-78 में कालू राम शर्माजी का लेख 'पौधों में मण्ड की जाँच' पढ़ा। पढ़ कर मज़ा आया और जानकारी भी बढ़ी। इस पूरे लेख में उन्होंने घटना का सिलसिलेवार ढंग से जो वर्णन दिया है वह प्रशंसनीय है। इस पूरे लेख में उन्होंने पौधों में मण्ड की जाँच हेतु जिस प्रक्रिया और धैर्य के साथ आश्रमशाला के फर्स्ट एड बॉक्स में रखे पायोडीन मल्हम के खोखे से आयोडीन का निष्कर्षण कर प्रयोग को किया, वह न केवल प्रेरणादायक है बल्कि सोचने के नए आयामों को भी खोलता है जो कि विज्ञान व विज्ञान शिक्षण की आत्मा है। उनका यह कार्य फर्स्ट एड बॉक्स के बारे में भी जानकारी देता है कि इसका उपयोग हम प्राथमिक उपचार के साथ-साथ विज्ञान शिक्षण हेतु विज्ञान किट के रूप में भी अंशतः कर सकते हैं।

अनानास कुमार,
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
धमतरी, छत्तीसगढ़

शैक्षणिक संदर्भ अंक-93 प्राप्त हुआ। इस अंक में धमतरी विकास खण्ड की प्राथमिक शाला, छाती की शिक्षिका श्रीमती छाया गोस्वामी की कक्षा का बेहतरीन अवलोकन श्रीदेवी ने 'खेल-खेल में व्याकरण' के रूप में प्रस्तुत करके इस संकुल के सभी शिक्षक साथियों को प्रोत्साहित किया है। इस महीने संकुल स्तर पर शिक्षक फोरम की बैठक में शिक्षिका छायाजी और उपस्थित सभी शिक्षक साथियों ने 'संदर्भ' के इस प्रयास को दिल से धन्यवाद दिया। मुझे सीखने को मिला कि अपना अनुभव जब किसी पत्र, पत्रिका या किसी और तरह से प्रिंट स्वरूप में आता है तो उसका महत्व कुछ और ही होता है जो संग्रहणीय हो जाता है। सभी ने अपने विद्यालय के पुस्तकालय में इस अंक को सहेज कर रखने की बात कही ताकि आवश्यकता होने पर उपयोग किया जा सके।

इसी अंक में कीर्ति जयराम का आलेख 'समझकर पढ़ना-सीखना' समसामयिक रहा। इस आलेख का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि अभी कुछ दिन पहले सेवाकालीन प्रशिक्षण चल रहा था जहाँ बार-बार सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जैसे प्रारम्भिक कौशलों के साथ समझ के महत्व को आधार बनाया गया था। इस सन्दर्भ में कीर्तिजी का आलेख बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ जिसकी मदद से सामूहिक चर्चा कर शिक्षक साथी अपनी समझ बनाने में सक्षम हो पा रहे थे और चर्चा में गुणात्मकता दिखती थी। इस प्रशिक्षण के शुरू के दिनों में कई शिक्षकों का सवाल था कि "बच्चे सीख नहीं पा रहे हैं" जिससे इस आलेख में भी मुखातिब होने की कोशिश की गई है। इसी आधार पर समझ बनती है कि पृष्ठभूमि, पढ़ना किसे कहते हैं, समझ के बारे में, समझ हासिल करने की कुछ आधारशिलाएँ जैसे कि अवधारणात्मक ज्ञान, भाषा कौशल, तेज़ी से शब्दों को पहचानना (डिकोडिंग की कुशल दक्षताएँ), पाठ की विशेषताओं को पहचानना आदि समझ के

साथ पढ़ने की प्रक्रिया में मददगार साबित होते हैं। निःसन्देह इनका सीधा सम्बन्ध शिक्षक साथियों से होता है। शिक्षक यह समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर बच्चे किस तरह सीख रहे होते हैं। इस तरह की समझ एक आधार देती है जिसमें प्रिंट सामाग्री काफी मददगार होती है।

सच कहें तो 'शैक्षणिक संदर्भ' एक मार्ग-दर्शक की भाँति इन दिनों शिक्षक साथियों के लिए मददगर साबित हो रही है। इस प्रयास के लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

नरेन्द्र साहू,
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
धमतरी, छत्तीसगढ़

भूल सुधार

- *अंक 93 में लेख* 'नन्ही तितली को उड़ना कौन सिखाता है?' *के पृष्ठ 62 पर प्रकाशित चित्र मॉथ (पतंगा) का है न कि तितली का। और इस चित्र से सम्बन्धित बातें भी मॉथ के बारे में हैं।*

– सम्पादक मण्डल